दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 22-06-2026

विषय सूची

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति

भारत के सांख्यिकीय डेटाबेस में आवश्यक उन्नयन

भारत के अंतरिक्ष भविष्य(Space Future) का निर्माण

अष्टलक्ष्मी – भारत की विकास गाथा के केंद्र में उत्तर-पूर्व

संक्षिप्त समाचार

- राखीगढ़ी
- प्रथम संविधान संशोधन
- संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एजेंसियों ने 13 संकटग्रस्त क्षेत्रों में तीव्र भूखमरी की चेतावनी
- अमोनिया गैस
- बायोचार
- सरकार पश्चिमी घाट के पारिस्थितिक संवेदनशील क्षेत्रों को अधिसूचित करने की तैयारी में

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति

सन्दर्भ

- हाल ही में फ्रांस और स्लोवाकिया की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने विदेशी गणमान्य व्यक्तियों को उपहारस्वरूप कई भारतीय सांस्कृतिक वस्तुएँ भेंट कीं, जिनमें **कलमकारी महाभारत चित्रकला, पोचमपल्ली रेशमी स्टोल, लाकाडोंग हल्दी तथा ठेकुआ** प्रमुख हैं।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा भेंट की गई वस्तुओं के बारे में

- **कलमकारी महाभारत चित्रकला**: यह आंध्र प्रदेश की हस्तनिर्मित चित्रकला है, जिसे पारंपरिक कलम-चित्रण तकनीक से बनाया गया है तथा इसमें महाभारत के विभिन्न प्रसंगों को दर्शाया गया है।
- **पोचमपल्ली रेशमी स्टोल**: यह तेलंगाना का हस्तनिर्मित वस्त्र है, जिसे पारंपरिक इकत (Ikat) प्रतिरोध-रंगाई तकनीक से तैयार किया जाता है। यह अपनी जटिल ज्यामितीय एवं पुष्पीय आकृतियों, उत्कृष्ट शिल्पकला और आकर्षक डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है।
- **कश्मीरी रेशमी कालीन**: यह हस्तनिर्मित कालीन उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक रेशम से बनाया जाता है तथा अपने जटिल पुष्पीय, पैस्ले, बेल-बूटेदार और पदकाकार डिजाइनों के लिए जाना जाता है।
- **पीतल का ढोकरा मृग-समूह** (Brass Dokra Antelope Set): यह एक हस्तनिर्मित कलाकृति है जो भारत की प्राचीन ढोकरा धातु-ढलाई परंपरा को प्रदर्शित करती है। यह परंपरा छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल के जनजातीय शिल्पकारों द्वारा सदियों से संरक्षित की जा रही है।
- मृग की आकृतियाँ सौम्यता, चपलता और प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक हैं तथा स्लोवाकिया के टाट्रा कैमॉइस (Tatra Chamois) से सांस्कृतिक संबंध स्थापित करती हैं।
- **हस्तनिर्मित थेवा अलंकरणयुक्त कफलिंक**: यह राजस्थान के प्रतापगढ़ की पारंपरिक आभूषण कला को प्रदर्शित करता है, जिसमें रंगीन काँच पर बारीक उत्कीर्ण स्वर्ण-पत्र को संयोजित किया जाता है।
- प्रधानमंत्री ने चरक **संहिता, सुश्रुत संहिता तथा ठेकुआ** की प्रतियाँ भी भेंट कीं।
- **चरक संहिता** भारत की समृद्ध वैज्ञानिक एवं बौद्धिक विरासत को प्रतिबिंबित करती है, जबकि **ठेकुआ** बिहार का एक पारंपरिक मिष्ठान्न है।
- **सुश्रुत संहिता** एक प्राचीन संस्कृत चिकित्सा ग्रंथ है तथा आयुर्वेद के आधारभूत ग्रंथों में से एक है। इसे लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैद्य सुश्रुत द्वारा रचित माना जाता है, जिन्हें प्रायः **"शल्य चिकित्सा का जनक"** कहा जाता है।
- जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री ने **राजस्थान की नागौरी अश्वगंधा, मेघालय की लाकाडोंग हल्दी, जम्मू-कश्मीर की चिनाब घाटी में उत्पादित रामबन शहद तथा बनारसी रेशमी स्टोल** भी भेंट किए।

सांस्कृतिक कूटनीति क्या है?

- सांस्कृतिक कूटनीति से तात्पर्य राष्ट्रों और लोगों के बीच विचारों, सूचनाओं, कला, भाषा तथा संस्कृति के अन्य पहलुओं के आदान-प्रदान से है, जिसका उद्देश्य पारस्परिक समझ को बढ़ावा देना है।
- यह एक सौम्य किंतु प्रभावशाली शक्ति के रूप में एकता और सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करती है।
- स्वतंत्रता के पश्चात अनेक देशों ने अपनी विदेश नीति को संस्कृति-केंद्रित बनाया अथवा विकास नीतियों को सांस्कृतिक अंतर-राज्यीय सहयोग के आधार पर विकसित किया।
- **सॉफ्ट पावर का उदाहरण**: यूरोप में सदियों पुराने विवादों और संघर्षों को समाप्त करने में यूरोपीय संघ (EU) का गठन सॉफ्ट पावर की सफलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद फ्रांस और जर्मनी के विद्यार्थियों को एक-दूसरे की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को समझने हेतु विनिमय कार्यक्रमों में भेजा गया।

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के स्तंभ

समन (शांति)

- शांति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता उसके अहिंसा के दीर्घ इतिहास तथा कूटनीतिक सहभागिताओं में परिलक्षित होती है।

- भारत ने **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों** में सक्रिय भूमिका निभाई है तथा विश्वभर में 40 से अधिक मिशनों में अपने कर्मियों का योगदान दिया है।
- देश की **शांति-उन्मुख विदेश नीति** तथा **गुटनिरपेक्ष स्थिति** ने उसे एक शांतिपूर्ण एवं स्थिर शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया है।
- **वैश्विक दक्षिण-दक्षिण सहयोग** के समर्थन ने भारत को विकासशील देशों के बीच सम्मान दिलाया है, जो उसे आर्थिक विकास के आदर्श मॉडल के रूप में देखते हैं।

समृद्धि (Prosperity)

- **मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया** जैसी पहलों के माध्यम से भारत की आर्थिक सफलता ने उसे एक उभरती हुई वैश्विक आर्थिक शक्ति और विशाल बाजार के रूप में स्थापित किया है।
- विशेष रूप से अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य-पूर्व के साथ बढ़ते व्यापारिक संबंध भारत के आर्थिक प्रभाव को दर्शाते हैं।

सुरक्षा (Security)

- क्षेत्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा के प्रति भारत की रणनीति संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और जापान जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ साझेदारी पर आधारित है।
- भारत ने **हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका** स्थापित की है तथा अपनी ऐतिहासिक गुटनिरपेक्ष नीति के साथ-साथ **क्वाड (QUAD)** जैसे सुरक्षा मंचों में सक्रिय भागीदारी निभाई है।
- **आतंकवाद-निरोध और मानवीय सहायता** पर भारत का विशेष बल उसे क्षेत्रीय सुरक्षा में योगदानकर्ता के रूप में स्थापित करता है।

संस्कृति (Culture)

- **बॉलीवुड, शास्त्रीय कलाएँ, योग तथा भारतीय भोजन** भारतीय संस्कृति के सबसे प्रमुख वैश्विक निर्यातों में शामिल हैं।
- विश्वभर में मनाया जाने वाला **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** इस बात का उदाहरण है कि भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है।
- भारतीय प्रवासी समुदाय भारतीय संस्कृति और मूल्यों के प्रसार में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा वैश्वीकरण के इस युग में भारत की छवि को सुदृढ़ करता है।

चुनौतियाँ

- **अन्य देशों की सॉफ्ट पावर से प्रतिस्पर्धा:** चीन, दक्षिण कोरिया और जापान जैसे देश अपनी संस्कृति के वैश्विक प्रचार-प्रसार में भारी निवेश करते हैं।
- **सीमित संस्थागत एवं वित्तीय संसाधन**: भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) जैसे संस्थानों को प्रमुख वैश्विक शक्तियों के समकक्ष संस्थानों की तुलना में बजटीय एवं मानव संसाधन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **सांस्कृतिक संपदाओं का अपर्याप्त उपयोग**: भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत, भाषाएँ, साहित्य, संग्रहालय और ऐतिहासिक स्थलों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमेशा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जाता।
- **डिजिटल एवं भाषाई बाधाएँ**: सीमित अनुवाद और डिजिटल प्रसार के कारण भारतीय सांस्कृतिक सामग्री वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में कम सुलभ है।

आगे की राह

- **सांस्कृतिक कूटनीति को सुदृढ़ बनाना**: भारत को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अपने मूल्यों का प्रचार जारी रखना चाहिए तथा विशेष रूप से उन क्षेत्रों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिए जहाँ उसकी सॉफ्ट पावर अभी उभर रही है।
- **डिजिटल कूटनीति का उपयोग**: भारत को युवा वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने के लिए डिजिटल मंचों में अधिक निवेश करना चाहिए। डिजिटल इंडिया जैसी पहलों का विस्तार अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सांस्कृतिक सहभागिता के नए अवसर प्रदान कर सकता है।
- **शैक्षिक कूटनीति**: भारत को विशेष रूप से विकासशील देशों के विद्यार्थियों को आकर्षित करने हेतु छात्रवृत्तियों और शैक्षिक विनिमय कार्यक्रमों की संख्या बढ़ानी चाहिए।

- **क्षेत्रीय सहभागिता**: भारत को दक्षिण एशिया, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने कूटनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक मजबूत करना चाहिए।

निष्कर्ष

- वैश्वीकरण के युग में भारत की सॉफ्ट पावर क्षमता उसकी सांस्कृतिक कूटनीति, आर्थिक प्रगति और रणनीतिक साझेदारियों के कारण उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है।
- अंतर्राष्ट्रीय भू-राजनीति की जटिलताओं के बीच भारत की सॉफ्ट पावर संबंधों को सुदृढ़ करने, पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देने तथा वैश्विक स्तर पर अपने हितों को आगे बढ़ाने की एक महत्त्वपूर्ण संपदा बनी रहेगी।

स्रोत: IE

भारत के सांख्यिकीय डेटाबेस में आवश्यक उन्नयन

सन्दर्भ

- भारत सरकार ने हाल ही में प्रमुख आर्थिक संकेतकों की कार्यप्रणालियों, आधार वर्षों तथा कवरेज को अद्यतन करके अपने **सांख्यिकीय डेटाबेस में व्यापक सुधार** किया है।

सांख्यिकीय डेटाबेस में सुधार की आवश्यकता

- **अंतर्राष्ट्रीय चिंताएँ:** वर्ष 2025 में भारत सरकार को राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी की गुणवत्ता के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा 'C' ग्रेड प्रदान किया गया, जो दूसरा सबसे निम्न ग्रेड है।
- **वर्तमान परिदृश्य का प्रतिनिधित्व**: डेटाबेस पुराने हो चुके थे और प्रत्येक वर्ष के साथ वास्तविक स्थिति का कम प्रतिनिधित्व कर रहे थे।
- पुराना आधार वर्ष समग्र मापन को कमजोर बनाता है और उन्हें वर्तमान वास्तविकता का कम प्रतिनिधि बनाता है।
- **पुराना आधार वर्ष**: 2011-12 के बाद के दशक में भारत की अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। नई उद्योग शाखाएँ (जैसे- नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल सेवाएँ) उभरी हैं तथा उपभोग पैटर्न और निवेश व्यवहार में परिवर्तन आया है।
- ऐसे संरचनात्मक परिवर्तन आधार वर्ष के पुनर्निर्धारण को आवश्यक बनाते हैं, ताकि संकेतक उभरते क्षेत्रों के वास्तविक योगदान तथा प्रौद्योगिकी एवं उत्पादकता में हुए परिवर्तनों को सही ढंग से प्रतिबिंबित कर सकें।

कौन-कौन से संकेतक अद्यतन किए गए हैं?

राष्ट्रीय लेखा एवं सकल घरेलू उत्पाद (GDP) सुधार

- जीडीपी किसी विशिष्ट अवधि के दौरान देश की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य को दर्शाता है।
- भारत ने जीडीपी का आधार वर्ष 2011-12 से बदलकर 2022-23 कर दिया है।
- संशोधित श्रृंखला कृषि और विनिर्माण क्षेत्रों में द्वि-अवस्फीति (Double Deflation) पद्धति को लागू करती है, जिसमें आगत (Input) कीमतों और निर्गत (Output) कीमतों में होने वाले परिवर्तनों का पृथक रूप से आकलन किया जाता है।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)

- खुदरा स्तर पर मूल्य परिवर्तनों, जो उपभोक्ता स्तर के बाजार को दर्शाते हैं, का मापन सीपीआई (CPI) द्वारा किया जाता है।
- सीपीआई का आधार वर्ष 2024 कर दिया गया है तथा जिन वस्तुओं को इसमें शामिल किया गया है और उनके सापेक्ष भार (Weightage) को 2023-24 के नवीनतम घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण के आधार पर निर्धारित किया गया है।

थोक मूल्य सूचकांक (WPI)

- थोक स्तर पर मूल्य परिवर्तनों, जो आदर्श रूप से उत्पादकों को प्राप्त कीमतों को दर्शाते हैं, का मापन WPI द्वारा किया जाता है।
- WPI का आधार वर्ष 2022-23 कर दिया गया है तथा इसमें शामिल वस्तुओं की संख्या 697 से बढ़ाकर 957 कर दी गई है।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- IIP एक प्रमुख संकेतक है जो समय के साथ औद्योगिक उत्पादन में होने वाले परिवर्तनों को मापता है।
- यह एक मासिक संकेतक है, जो निर्दिष्ट आधार वर्ष के संदर्भ में औद्योगिक उत्पादों की एक प्रतिनिधि टोकरी के उत्पादन की मात्रा में मासिक परिवर्तनों को दर्शाता है।

NEXT IAS

- अखिल भारतीय औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) का आधार वर्ष 2011-12 से संशोधित कर 2022-23 कर दिया गया है।

असंगठित क्षेत्र उद्यमों पर त्रैमासिक बुलेटिन (QBUSE) की शुरुआत

- वर्ष 2025 से असंगठित क्षेत्र उद्यमों पर त्रैमासिक बुलेटिन (QBUSE) प्रारंभ किया गया है, जिसके अंतर्गत वार्षिक रिपोर्ट की प्रतीक्षा करने के बजाय प्रत्येक तिमाही में अंतरिम परिणाम उपलब्ध कराए जाते हैं।
- त्रैमासिक आँकड़ों का उद्देश्य असंगठित क्षेत्र में होने वाले अल्पकालिक परिवर्तनों को अधिक प्रभावी ढंग से दर्ज करना है।

2022-23 को चुनने का औचित्य

- वर्ष 2022-23 को नए आधार वर्ष के रूप में इसलिए चुना गया क्योंकि यह 2019-2021 की व्यवधानपूर्ण अवधि के बाद का सबसे हालिया "सामान्य" वर्ष है।
- वर्ष 2019-20 और 2020-21 कोविड-19 महामारी से गंभीर रूप से प्रभावित रहे, जिसके कारण उपभोग पैटर्न और औद्योगिक उत्पादन में अस्थायी परिवर्तन देखने को मिले।

सांख्यिकीय सुधारों का महत्त्व

- **साक्ष्य-आधारित शासन को सुदृढ़ बनाना**: अधिक विश्वसनीय आँकड़े सरकारों को बेहतर नीतियाँ बनाने तथा उनके परिणामों की अधिक प्रभावी निगरानी करने में सक्षम बनाते हैं।
- **मौद्रिक नीति में सुधार**: मुद्रास्फीति के सटीक अनुमान भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) को ब्याज दरों का अधिक प्रभावी निर्धारण करने में सहायता प्रदान करते हैं। साथ ही, मुद्रास्फीति का बेहतर मापन व्यापक आर्थिक स्थिरता को समर्थन देता है।
- **आर्थिक वृद्धि के मापन में सुधार**: अद्यतन GDP, सकल मूल्य वर्धन (GVA) तथा औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के आँकड़े देश के आर्थिक प्रदर्शन का अधिक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करेंगे।
- **अंतर्राष्ट्रीय विश्वसनीयता:** वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने से अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकीय आकलनों में भारत की स्थिति बेहतर होगी। साथ ही, विश्वसनीय आर्थिक आँकड़े निवेशकों के विश्वास तथा नीतिगत विश्वसनीयता को बढ़ाएँगे।

निष्कर्ष

- हाल के सांख्यिकीय सुधार भारत की सांख्यिकीय प्रणाली को अधिक प्रासंगिक, उत्तरदायी और विश्वसनीय बनाने की दिशा में एक निर्णायक परिवर्तन का प्रतीक हैं।
- आँकड़ों की गुणवत्ता में निरंतर सुधार तथा उनके नियमित अद्यतन को सुनिश्चित करने के प्रयास साक्ष्य-आधारित नीति-निर्माण और आर्थिक शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होंगे।

स्रोत: TH, TH, PIB

भारत के अंतरिक्ष भविष्य का निर्माण

सन्दर्भ

- पिछले बारह वर्षों में भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम राष्ट्रीय आत्मविश्वास, तकनीकी आत्मनिर्भरता और वैश्विक महत्वाकांक्षा का प्रतीक बनकर उभरा है।

एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति का उदय

- वर्तमान में भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 8 अरब डॉलर है तथा वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में इसकी हिस्सेदारी 2–3% है।
- अगले दशक में इसके पाँच गुना बढ़कर 40–45 अरब डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है, जबकि वर्ष 2030 तक इसकी वैश्विक हिस्सेदारी 8% तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है।
- भारत ने वर्तमान में संचालित PSLV, GSLV तथा LVM3 प्रक्षेपण यानों के माध्यम से निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में 10 टन तक तथा भू-समकालिक स्थानांतरण कक्षा (GTO) में 4.2 टन तक के उपग्रहों के प्रक्षेपण हेतु अंतरिक्ष परिवहन प्रणालियों में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है।

चंद्र अन्वेषण – चंद्रयान कार्यक्रम

- भारत की चन्द्रयात्रा की नींव **वर्ष 2008** में चंद्रयान-1 के साथ रखी गई, जो चंद्रमा के लिए **भारत का पहला मिशन** था।
- इस मिशन ने चंद्रमा की सतह पर **जल अणुओं तथा हाइड्रॉक्सिल** की उपस्थिति के प्रमाण खोजे। इसके बाद वर्ष 2019 में प्रक्षेपित चंद्रयान-2 ने भारत के चंद्र कार्यक्रम को और सुदृढ़ किया।
- **23 अगस्त 2023** को चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के **दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट लैंडिंग कर भारत को ऐसा करने वाला विश्व का पहला देश** बना दिया। साथ ही, भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद **चंद्र सतह पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश** बना।

मंगल ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान)

- **24 सितंबर 2014 को मंगलयान** सफलतापूर्वक **मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश** कर गया, जिससे **भारत अपने प्रथम प्रयास में ही मंगल तक पहुँचने वाला विश्व का पहला देश** बन गया।
- इस उपलब्धि के साथ, **इसरो (ISRO)** संयुक्त राज्य अमेरिका की **नासा (NASA),** रूस की **रोस्कोस्मोस (Roscosmos)** तथा यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी **(ESA)** के बाद मंगल की कक्षा में अंतरिक्ष यान स्थापित करने वाली **विश्व की चौथी अंतरिक्ष एजेंसी** बन गई।

आदित्य-L1 : भारत की पहली सौर वेधशाला

- वर्ष 2023 में प्रक्षेपित इस अंतरिक्ष यान को पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर स्थित सूर्य-पृथ्वी L1 लाग्रांज बिंदु के चारों ओर हेलो कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया।
- यह मिशन सौर कोरोना, सौर पवनों तथा अंतरिक्ष मौसम की उन घटनाओं का अध्ययन करता है जो पृथ्वी के पर्यावरण और तकनीकी प्रणालियों को प्रभावित करती हैं।

अंतरिक्ष खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष डॉकिंग

- भारत की पहली बहु-तरंगदैर्ध्य अंतरिक्ष वेधशाला एस्ट्रोसैट (AstroSat) ने सितंबर 2025 में कक्षा में अपने दस वर्ष पूरे किए और अनेक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोजों में योगदान दिया।
- वर्ष 2024 में प्रक्षेपित एक्सपोसैट (XPoSat) ने एक्स-किरण खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं का और विस्तार किया।
- स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SPADEX) के माध्यम से भारत अंतरिक्ष में स्वायत्त डॉकिंग एवं अनडॉकिंग का सफल प्रदर्शन करने वाला संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा देश बन गया।

शुक्र ऑर्बिटर मिशन

- भारत सरकार द्वारा अनुमोदित शुक्र ऑर्बिटर मिशन का प्रक्षेपण **वर्ष 2028** में प्रस्तावित है।
- यह मिशन शुक्र ग्रह के भूविज्ञान, सतही संरचना, वायुमंडल, आयनमंडल तथा पुनःसतहीकरण प्रक्रियाओं का अध्ययन करेगा।

गगनयान : भारत का पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम

- इस मिशन का उद्देश्य अधिकतम **तीन भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को 400 किलोमीटर की कक्षा में तीन दिनों** तक भेजना और सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाना है। इस कार्यक्रम में **दो मानव-रहित मिशन तथा एक मानव-सहित मिशन** शामिल हैं।
- भारत ने **वर्ष 2025 में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए इसरो-नासा समर्थित एक्सिओम-4** (Axiom-4) मिशन में भाग लिया।
- **ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने वर्ष 2025 में फाल्कन-9 द्वारा प्रक्षेपित स्पेसएक्स ड्रैगन अंतरिक्ष यान से यात्रा** की।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन

- **भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS)** भारत का प्रस्तावित अंतरिक्ष स्टेशन है तथा **स्पेस विज़न 2047** का एक प्रमुख स्तंभ है।
- BAS निम्न पृथ्वी कक्षा में स्थापित **पाँच-मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन** होगा, जिसे दीर्घकालिक मानव अंतरिक्ष अभियानों तथा सूक्ष्म-गुरुत्वाकर्षण में उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए विकसित किया जा रहा है।

पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान (RLV)

- **इसरो का RLV-TD** कार्यक्रम कम लागत वाले और पुनः प्रयोज्य अंतरिक्ष परिवहन तंत्रों की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
- इसरो ने **वर्ष 2016** में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC SHAR), श्रीहरिकोटा से **RLV-TD का** सफल उड़ान परीक्षण किया, जिसमें स्वायत्त नेविगेशन, मार्गदर्शन एवं नियंत्रण प्रणाली, पुनः प्रयोज्य तापीय सुरक्षा प्रणाली तथा पुनःप्रवेश मिशन प्रबंधन तकनीकों का सत्यापन किया गया।

स्वदेशी इलेक्ट्रॉनिक्स एवं ऑन-बोर्ड प्रणालियाँ

- इसरो ने **सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला (SCL), चंडीगढ़** के साथ मिलकर **विक्रम3201**, भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी **32-बिट अंतरिक्ष माइक्रोप्रोसेसर** तथा उच्च विश्वसनीयता वाले अंतरिक्ष अभियानों हेतु **कल्पना32** विकसित किया है।
- इससे विदेशी घटकों पर निर्भरता कम होती है तथा मिशनों की सुरक्षा में सुधार होता है।

नाविक (NavIC) – भारत की स्वदेशी नौवहन प्रणाली

- यह भारत तथा उसकी सीमाओं से 1,**500 किलोमीटर** तक के क्षेत्र में सटीक स्थिति निर्धारण, नौवहन और समय-निर्धारण सेवाएँ प्रदान करती है।
- यह प्रणाली **उपग्रहों के एक समूह (Constellation)** के माध्यम से निरंतर क्षेत्रीय कवरेज उपलब्ध कराती है।

भारत के अंतरिक्ष परिवर्तन को गति देता निजी क्षेत्र

- वर्ष 2020 में निजी क्षेत्र के लिए अंतरिक्ष क्षेत्र को खोलने तथा उसके बाद भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 के लागू होने से अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला के विभिन्न क्षेत्रों में निजी भागीदारी को बढ़ावा मिला।
- वर्ष 2024 में सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति को उदार बनाया, जिसके अंतर्गत चयनित गतिविधियों में 100% तक FDI की अनुमति दी गई।
- उपग्रह निर्माण एवं संचालन, उपग्रह डेटा उत्पादों तथा ग्राउंड/उपयोगकर्ता खंड सेवाओं में 74% तक FDI स्वचालित मार्ग से अनुमत है।
- प्रक्षेपण यानों, संबंधित प्रणालियों तथा स्पेसपोर्ट्स में 49% तक FDI की अनुमति है, जबकि उपग्रह एवं ग्राउंड-सेगमेंट घटकों तथा उप-प्रणालियों के निर्माण में 100% FDI स्वचालित मार्ग से अनुमत है।
- **पिक्सेल (Pixxel), ध्रुव स्पेस (Dhruva Space), स्कायरूट एयरोस्पेस (Skyroot Aerospace), अग्निकुल कॉसमॉस (Agnikul Cosmos) तथा बेलाट्रिक्स एयरोस्पेस (Bellatrix** Aerospace) जैसी कंपनियाँ भारत के नए अंतरिक्ष युग की अग्रणी बनकर उभरी हैं।

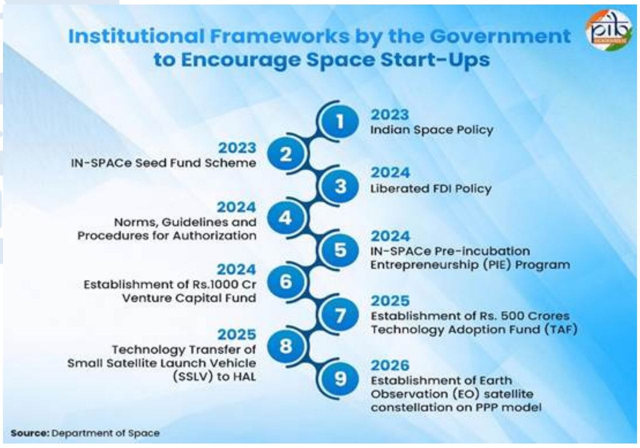

भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का विस्तार

- भारत अपनी **"पड़ोसी प्रथम"** (Neighbourhood First) नीति के अंतर्गत **बिम्सटेक (BIMSTEC) अंतरिक्ष कार्यक्रम** का नेतृत्व कर रहा है।
- **उत्तर-पूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (NESAC)** बिम्सटेक देशों के लिए अंतरिक्ष अनुप्रयोगों तथा उपग्रह प्रौद्योगिकियों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है।
- यह पहल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, आपदा प्रबंधन तथा क्षमता निर्माण के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ करती है।

- **भारत-रूस साझेदारी**: दशकों पुराने अंतरिक्ष सहयोग को आगे बढ़ाते हुए, **इसरो (ISRO) और रोस्कोस्मोस (ROSCOSMOS)** ने **वर्ष 2018 में गगनयान मिशन के समर्थन हेतु एक समझौता ज्ञापन (MoU)** पर हस्ताक्षर किए।
- भारत की बढ़ती वैश्विक साझेदारियाँ **तृष्णा** (TRISHNA - Thermal InfraRed Imaging Satellite for High-resolution Natural Resource Assessment) **मिशन** में भी परिलक्षित होती हैं, जिसे **इसरो और फ्रांस की अंतरिक्ष एजेंसी CNES** द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया जा रहा है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र की चुनौतियाँ

- प्रतिस्पर्धा एवं वैश्विक बाजार हिस्सेदारी: **वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में 8% हिस्सेदारी** प्राप्त करने के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रतिस्पर्धा करनी होगी।
- **प्रौद्योगिकी विकास एवं नवाचार**: पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान, लघुकरण किए गए उपग्रह तथा उन्नत प्रणोदन प्रणालियों जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु बड़े पैमाने पर निवेश और अनुसंधान की आवश्यकता होती है।
- **नियामक ढाँचा एवं लाइसेंसिंग**: लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं, निर्यात नियंत्रणों तथा अनुपालन संबंधी आवश्यकताओं का प्रबंधन जटिल हो सकता है।
- **अवसंरचना एवं सुविधाएँ**: ऐसी उन्नत अवसंरचना का विकास और रखरखाव पर्याप्त पूंजी निवेश की मांग करता है।

निष्कर्ष

- पिछले बारह वर्षों में भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम राष्ट्रीय विकास का एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक बन गया है, जिसने स्वदेशी नवाचार के माध्यम से सुशासन, आर्थिक वृद्धि तथा जनकल्याण को समर्थन प्रदान किया है।
- **स्पेस विज़न 2047** की दिशा में आगे बढ़ते हुए भारत अंतरिक्ष-आधारित नवाचार के माध्यम से आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक प्रगति और सामाजिक विकास को और अधिक सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहा है।

स्रोत: PIB

अष्टलक्ष्मी – भारत की विकास गाथा के केंद्र में उत्तर-पूर्व

सन्दर्भ

- हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने **उत्तर-पूर्व को भारत की "अष्टलक्ष्मी"** बताया और कहा कि केंद्र सरकार ने क्षेत्र के विकास में तेजी लाने के लिए **"एक्ट ईस्ट" (Act East) नीति से आगे बढ़कर "एक्ट फास्ट" (Act Fast) दृष्टिकोण** अपनाया है।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (NER)

- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में **आठ राज्य** शामिल हैं, अर्थात् **अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा।**
- यह क्षेत्र सांस्कृतिक एवं जातीय दृष्टि से अत्यंत विविधतापूर्ण है, जहाँ **200 से अधिक जातीय समूह** निवास करते हैं, जिनकी अपनी विशिष्ट भाषाएँ, बोलियाँ और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचानें हैं।
- यह क्षेत्र देश के **कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 7.97% तथा कुल जनसंख्या का 3.78%** भाग है।
- इसकी अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ **कुल 5,484 किलोमीटर** लंबी हैं, जिनमें बांग्लादेश (1,880 किमी), म्यांमार (1,643 किमी), चीन (1,346 किमी), भूटान (516 किमी) तथा नेपाल (99 किमी) के साथ लगी सीमाएँ शामिल हैं।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र का महत्त्व

भू-रणनीतिक महत्त्व

- **अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ**:उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (NER) की सीमाएँ पाँच देशों—चीन, भूटान, म्यांमार, बांग्लादेश और नेपाल—से लगती हैं, जो इसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनाती हैं।
- **आसियान (ASEAN) का प्रवेश-द्वार**:यह भारत की एक्ट ईस्ट नीति की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए सेतु का कार्य करता है।
- वर्तमान भारत–आसियान व्यापार लगभग 125 अरब डॉलर का है, जिसके 200 अरब डॉलर से अधिक होने का अनुमान है।
- **सामरिक सैन्य महत्त्व**:चीन के निकट होने के कारण यह क्षेत्र राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व रखता है।

आर्थिक एवं व्यापारिक क्षमता

- **सीमा-पार व्यापार:**कालादान बहु-माध्यम पारगमन परियोजना तथा भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी परियोजनाएँ दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार को बढ़ावा देती हैं।
- **अप्रयुक्त बाजार एवं प्राकृतिक संसाधन**:विशाल प्राकृतिक संसाधन और अपेक्षाकृत अप्रयुक्त बाजार इसे ऊर्जा, कृषि, पर्यटन और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में प्रारंभिक निवेशकों के लिए आदर्श बनाते हैं।

स्वास्थ्य, कल्याण एवं पर्यटन

- यह क्षेत्र स्वच्छ वायु, जैविक खाद्य पदार्थ, शांत प्राकृतिक परिदृश्य तथा समृद्ध जनजातीय संस्कृतियों के लिए प्रसिद्ध है।
- यह वेलनेस पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन (इको-टूरिज्म) तथा साहसिक पर्यटन के लिए अत्यंत उपयुक्त है।
- नृत्य, संगीत और त्योहारों सहित इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता सांस्कृतिक कूटनीति तथा सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देती है।

क्षेत्र के समक्ष चुनौतियाँ

कमजोर संपर्क व्यवस्था:

- दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों तथा अविकसित सड़क, रेल और वायु नेटवर्क के कारण संपर्क व्यवस्था चुनौतीपूर्ण बनी हुई है।

सीमित डिजिटल अवसंरचना:

- यद्यपि स्थिति में सुधार हो रहा है, फिर भी इंटरनेट और दूरसंचार संपर्क देश के अन्य भागों की तुलना में अपेक्षाकृत कमजोर है।

उग्रवाद एवं आंतरिक सुरक्षा संबंधी समस्याएँ:

- कुछ क्षेत्रों में उग्रवादी समूहों तथा अलगाववादी आंदोलनों की उपस्थिति बनी हुई है।
- म्यांमार और बांग्लादेश के साथ छिद्रपूर्ण सीमाओं के कारण सीमा-पार घुसपैठ तथा हथियारों की तस्करी की समस्या भी मौजूद है।
- यद्यपि सुरक्षा स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, फिर भी समय-समय पर होने वाली अशांति शांति और विकास को प्रभावित करती है।

भौगोलिक एवं पर्यावरणीय बाधाएँ:

- पर्वतीय एवं वनाच्छादित भू-भाग के कारण अवसंरचना और उद्योगों का विकास कठिन तथा महँगा हो जाता है।

जातीय तनाव एवं प्रवासन संबंधी मुद्दे:

- विभिन्न समुदायों के बीच तनाव तथा स्वायत्तता या पृथक राज्यों की माँग क्षेत्र में अनिश्चितता उत्पन्न करती है।
- पड़ोसी देशों से होने वाले अवैध प्रवासन ने कुछ क्षेत्रों की जनसांख्यिकीय संरचना को प्रभावित किया है, जिससे सामाजिक अशांति उत्पन्न हुई है।

सरकारी पहल:

- **नीतिगत समर्थन:**

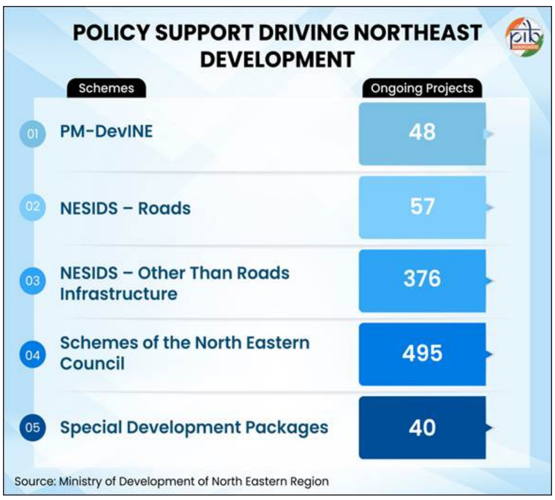

- **सम्बद्धता (connectivity) :**

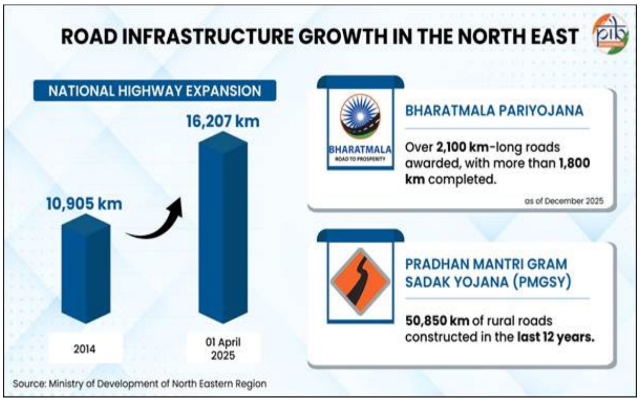

- **बोगीबील पुल (2018)**: यह ब्रह्मपुत्र नदी पर निर्मित एक संयुक्त सड़क एवं रेल पुल है।
- **ढोला–सादिया पुल (2017)**: यह उत्तरी असम और पूर्वी अरुणाचल प्रदेश के बीच पहली स्थायी सड़क संपर्क सुविधा प्रदान करता है। यह ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदी लोहित नदी पर निर्मित है।
- **नोनेय पुल:** मणिपुर में स्थित नोनेय पुल, 111 किलोमीटर लंबी जिरीबाम–इंफाल रेल परियोजना का हिस्सा है। यह अलिंग नदी पर निर्मित है और विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे पियर (स्तंभ) पुल है।
- **सेला सुरंग (Sela Tunnel)**: यह सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती क्षेत्र में वर्षभर संपर्क सुविधा सुनिश्चित करती है।

*** भौगोलिक संकेतक (GI) टैग**

- मार्च 2026 तक उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में 89 भौगोलिक संकेतक (GI) पंजीकृत उत्पाद थे।
- यह क्षेत्र अनेक GI-टैग प्राप्त फलों एवं मसालों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें क्वीन पाइनएप्पल, लाकाडोंग हल्दी, किंग चिली (राजा मिर्च) तथा बड़ी इलायची प्रमुख हैं।

अंतर्देशीय जलमार्ग

- उत्तर-पूर्व में राष्ट्रीय जलमार्गों की संख्या 1 से बढ़कर 20 हो गई है।
- ब्रह्मपुत्र और बराक नदी परिवहन प्रणालियों का विकास किया गया है।

ऊर्जा एवं हरित विकास

- दिबांग बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना (2,880 मेगावाट) तथा सुबनसिरी निम्न जलविद्युत परियोजना (2,000 मेगावाट) क्षेत्र की प्रमुख ऊर्जा परियोजनाएँ हैं।
- उत्तर-पूर्व गैस ग्रिड के माध्यम से सभी आठ राज्यों को जोड़ने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

स्रोत: PIB

संक्षिप्त समाचार

राखीगढ़ी

सन्दर्भ

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने हरियाणा के राखीगढ़ी से प्राप्त लगभग 5,000 वर्ष पुराने कंकालों को वैज्ञानिक परीक्षण एवं चेहरे के पुनर्निर्माण (Facial Reconstruction) हेतु भेजा है।

राखीगढ़ी

- वर्तमान राखीगढ़ी हरियाणा में घग्गर-हाकड़ा नदी मैदान में स्थित है तथा **घग्गर नदी से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी** पर अवस्थित है।
- यह पुरातात्त्विक स्थल **2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व** के काल का है।
- यह भारतीय **उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल** है।
- इस स्थल का प्रथम उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के **अमरेंद्र नाथ द्वारा** किया गया था।
- **प्रमुख खोजें**
  - **अन्नागार (Granary):**यहाँ पर परिपक्व हड़प्पा काल (2600 ईसा पूर्व से 2000 ईसा पूर्व) का एक अन्नागार प्राप्त हुआ है।
  - इसमें 7 आयताकार अथवा वर्गाकार कक्ष पाए गए हैं।
  - **संस्कृति, वस्त्र एवं पूजा-पद्धति:** राखीगढ़ी में अग्नि वेदियाँ (Fire Altars) तथा अर्धवृत्ताकार (Apsidal) संरचनाएँ प्राप्त हुई हैं।
  - **कब्रिस्तान एवं दफन स्थल:** राखीगढ़ी में परिपक्व हड़प्पा काल का एक कब्रिस्तान खोजा गया है।
  - यहाँ से आठ कब्रें प्राप्त हुई हैं।

हड़प्पा सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता को मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक माना जाता है।
- इसका विकास **सिंधु नदी के किनारे** हुआ था, इसलिए इसे **सिंधु घाटी सभ्यता** भी कहा जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता को **कांस्य युगीन सभ्यता** (Bronze Age Civilization) के रूप में पहचाना जाता है, क्योंकि यहाँ से **ताँबा-आधारित मिश्रधातुओं से निर्मित अनेक वस्तुएँ** प्राप्त हुई हैं।

स्रोत: IE

प्रथम संसोधन

सन्दर्भ

- **18 जून 1951** को भारतीय संविधान का प्रथम संविधान संशोधन अधिनियम प्रभाव में आया।

परिचय

- इस संशोधन ने **तीन मौलिक अधिकारों—वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता का अधिकार तथा संपत्ति के अधिकार**—के दायरे में परिवर्तन किया।
- इसके अतिरिक्त, इसने एक नई संवैधानिक व्यवस्था भी स्थापित की, जिसके माध्यम से कुछ कानूनों को इस आधार पर चुनौती से संरक्षण प्रदान किया जा सकता था कि वे मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।
- ये परिवर्तन स्वतंत्र **भारत के प्रथम आम चुनावों से पूर्व लागू** किए गए थे।

मुख्य प्रावधान

- **मौलिक अधिकारों पर युक्तिसंगत प्रतिबंध:**इस संशोधन द्वारा अनुच्छेद 19(2) में संशोधन किया गया, जिससे राज्य को निम्नलिखित आधारों पर वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर युक्तिसंगत प्रतिबंध लगाने की शक्ति प्राप्त हुई—
- लोक व्यवस्था (Public Order)
- विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध
- अपराध के लिए उकसावा
- राज्य की सुरक्षा आदि।
- **भूमि सुधार कानूनों का संरक्षण**: कृषि सुधारों से संबंधित कानूनों को मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर चुनौती से बचाने हेतु अनुच्छेद 31A तथा अनुच्छेद 31B जोड़े गए।
- **नौवीं अनुसूची का सृजन:** अनुच्छेद 31B के अंतर्गत नौवीं अनुसूची की स्थापना की गई।
- नौवीं अनुसूची में सम्मिलित कानूनों को प्रारंभ में मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर न्यायिक समीक्षा से संरक्षण प्राप्त था।
- बाद में **नौवीं अनुसूची को प्राप्त संरक्षण के दायरे की समीक्षा** उच्चतम न्यायालय ने ऐतिहासिक आई.**आर. कोएल्हो बनाम तमिलनाडु राज्य** मामले में की।
- **सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए विशेष प्रावधान:** इस संशोधन द्वारा **अनुच्छेद 15(4)** जोड़ा गया, जिसने राज्य को सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों तथा अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों की उन्नति के लिए विशेष प्रावधान करने का अधिकार प्रदान किया।

स्रोत: IE

संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एजेंसियों ने 13 संकटग्रस्त क्षेत्रों में तीव्र भुखमरी की चेतावनी दी

सन्दर्भ

- संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि संघर्ष, जलवायु संबंधी झटकों तथा वित्तीय संसाधनों

की कमी के कारण आने वाले महीनों में विश्व के 13 संकटग्रस्त क्षेत्रों में तीव्र भुखमरी और अधिक गंभीर हो सकती है।

परिचय

- दी फ़ूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन (FAO) तथा वर्ल्ड फ़ूड प्रोग्राम (WFP) की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 26.6 करोड़ लोग पहले से ही तीव्र खाद्य असुरक्षा के उच्च स्तर का सामना कर रहे हैं।
- **सूडान,दक्षिण सूडान ,यमन और फिलिस्तीन** सबसे अधिक चिंता वाले देश बने हुए हैं, जबकि अकाल के बढ़ते खतरे के कारण **नाइजीरिया और सोमालिया** को भी उच्च जोखिम वाली सूची में शामिल किया गया है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि **वर्ष 2022 के बाद** से खाद्य सहायता के लिए उपलब्ध **वित्तपोषण में लगभग 60 प्रतिशत की कमी** आई है, जबकि मानवीय सहायता की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है।
- संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों ने यह भी चेतावनी दी कि **पश्चिम एशिया के संघर्ष के दुष्प्रभाव तथा पूर्वी डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ दी कांगो में इबोला प्रकोप आजीविका और राहत सहायता की पहुँच को और अधिक प्रभावित** कर रहे हैं।

खाद्य सुरक्षा क्या है?

- खाद्य सुरक्षा (Food Security) वह स्थिति है जब लोगों को सामान्य वृद्धि एवं विकास तथा सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो।
- इसके विपरीत, खाद्य असुरक्षा (Food Insecurity) वह स्थिति है जब उपर्युक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं होतीं।
- तीव्र खाद्य असुरक्षा (Acute Food Insecurity) वह स्थिति है जो लोगों के जीवन या आजीविका के लिए प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न करती है।
- तीव्र खाद्य असुरक्षा को मापने के लिए वैश्विक स्तर पर एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण (Integrated Food Security Phase Classification - IPC) का उपयोग किया जाता है।
- IPC खाद्य असुरक्षा को पाँच स्तरों में वर्गीकृत करता है, जो "कोई/न्यूनतम खाद्य असुरक्षा" (IPC चरण 1) से लेकर "विनाशकारी स्थिति" अथवा "अकाल" (IPC चरण 5) तक होते हैं।

स्रोत: AIR, WFP

अमोनिया गैस

सन्दर्भ

- तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले में स्थित एक निजी समुद्री खाद्य प्रसंस्करण एवं निर्यात इकाई में अमोनिया गैस के रिसाव से अनेक श्रमिकों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

अमोनिया (NH_3) क्या है?

- अमोनिया (NH_3) एक **रंगहीन गैस** है, जिसमें तीव्र एवं **तीखी गंध** होती है। यह नाइट्रोजन और **हाइड्रोजन से बना एक सरल अकार्बनिक यौगिक** है।
- यद्यपि यह कार्बनिक पदार्थों के अपघटन के दौरान प्राकृतिक रूप से अल्प मात्रा में उत्पन्न होती है, फिर भी इसके व्यापक औद्योगिक एवं कृषि उपयोगों के कारण इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है।
- **औद्योगिक अमोनिया का व्यावसायिक उत्पादन हैबर-बॉश प्रक्रिया** (Haber–Bosch Process) द्वारा किया जाता है, जिसमें वायुमंडलीय नाइट्रोजन उच्च तापमान एवं दाब पर लौह उत्प्रेरक की उपस्थिति में हाइड्रोजन के साथ अभिक्रिया करती है।
- इसका **प्रमुख उपयोग** उर्वरक उद्योग, रासायनिक उद्योग तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में किया जाता है, क्योंकि इसमें उत्कृष्ट शीतलन क्षमता होती है।

स्रोत: TH

बायोचार

सन्दर्भ

- बायोचार कृषि अपशिष्ट को एक मूल्यवान संसाधन में परिवर्तित करने, मृदा स्वास्थ्य में सुधार करने तथा

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए एक सतत समाधान के रूप में उभर रहा है।

बायोचार क्या है ?

- **बायोचार** कोयले जैसी एक सामग्री है, जिसे कृषि एवं वानिकी अपशिष्टों से प्राप्त जैवभार (Biomass) को **पायरोलिसिस** (Pyrolysis) नामक नियंत्रित प्रक्रिया में जलाकर तैयार किया जाता है।
- सामान्य कार्बनिक पदार्थों के विपरीत, बायोचार का अपघटन बहुत धीमी गति से होता है और यह सैकड़ों वर्षों तक मृदा में बना रह सकता है।
- यह **अत्यधिक छिद्रयुक्त (Porous)** होता है, जिससे यह जल, पोषक तत्वों तथा लाभकारी सूक्ष्मजीवों को संग्रहित कर सकता है।

बायोचार के लाभ

कृषि उत्पादकता

- अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बायोचार विशेष रूप से पोषक तत्वों की कमी वाली मिट्टियों में फसल उत्पादकता को 10–30 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

कार्बन क्रेडिट

- बायोचार कार्बन क्रेडिट उत्पन्न कर सकता है क्योंकि यह वायुमंडल से कार्बन को हटाकर मृदा में संग्रहीत करता है।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों के अनुसार, एक टन प्रमाणित बायोचार लगभग 2–2.8 टन कार्बन डाइऑक्साइड-समतुल्य (CO_2-eq) क्रेडिट उत्पन्न कर सकता है।

जल धारण क्षमता

- बायोचार स्पंज की तरह कार्य करता है और अपनी छिद्रयुक्त संरचना में जल को संग्रहीत करता है।
- अनुसंधानों से पता चलता है कि यह मिट्टी की जल धारण क्षमता को 10–25 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

स्रोत: TH

सरकार पश्चिमी घाट के पारिस्थितिक संवेदनशील क्षेत्रों को अधिसूचित करने की तैयारी में

सन्दर्भ

- पश्चिमी घाट के कुछ क्षेत्रों को शीघ्र ही **पारिस्थितिक संवेदनशील क्षेत्र** (Ecologically Sensitive Areas - ESA) के रूप में अधिसूचित कर कम-से-कम तीन राज्यों में अधिक सशक्त कानूनी संरक्षण प्रदान किया जा सकता है।
- अधिसूचना जारी होने के बाद इन क्षेत्रों में खनन, प्रदूषणकारी उद्योगों तथा बड़े निर्माण परियोजनाओं पर अधिक कठोर प्रतिबंध लागू होंगे।

पारिस्थितिक संवेदनशील क्षेत्र (ESA) क्या हैं??

- ESA ऐसे नामित क्षेत्र हैं जिन्हें उनकी समृद्ध जैव विविधता, नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र अथवा महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिकीय कार्यों के कारण विशेष पर्यावरणीय संरक्षण के लिए चिह्नित किया जाता है।
- इन्हें पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत अधिसूचित किया जाता है।
- वर्ष 2022 में Supreme Court of India ने निर्देश दिया था कि प्रत्येक संरक्षित वन, राष्ट्रीय उद्यान तथा वन्यजीव अभयारण्य की निर्धारित सीमा से कम-से-कम एक किलोमीटर का अनिवार्य पारिस्थितिक-संवेदनशील क्षेत्र (Eco-Sensitive Zone) होना चाहिए।

प्रतिबंध:

- कुछ गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाता है।
- कुछ गतिविधियों को कड़े नियमन के अधीन रखा जाता है।
- जबकि कुछ गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि विकास पर्यावरणीय क्षति की कीमत पर न हो।
- ESA का दर्जा मिलने का अर्थ यह भी है कि क्षेत्र में प्रस्तावित किसी भी विकास परियोजना की अधिक कठोर पर्यावरणीय जाँच की जाएगी।

NEXT IAS

पश्चिमी घाट

- पश्चिमी घाट, जिसे सह्याद्रि पर्वतमाला भी कहा जाता है, भारत के पश्चिमी तट के समानांतर विस्तृत पर्वत श्रृंखला है।
- **अवस्थिति:** पश्चिमी घाट उत्तर में गुजरात से दक्षिण में तमिलनाडु तक **लगभग 1,600 किलोमीटर** तक फैला हुआ है।
- यह छह राज्यों—गुजरात, महाराष्ट्र,गोवा,कर्नाटक, केरल एवं तमिलनाडु में विस्तृत है।

- **जैवविविधता:** पश्चिमी घाट को विश्व के जैविक विविधता के 8 सबसे महत्त्वपूर्ण "हॉटस्पॉट्स" में से एक माना जाता है।
- भारत के कुल क्षेत्रफल के केवल लगभग 6% से कम क्षेत्र में फैले होने के बावजूद, पश्चिमी घाट में भारत में पाई जाने वाली कुल पादप, मत्स्य, उभयचर-सरीसृप (Herpeto-fauna), पक्षी तथा स्तनधारी प्रजातियों में से 30% से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- यहाँ अनेक स्थानिक (Endemic) प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जैसे नीलगिरी ताहर तथा लायन टेल्ड मकॉक।
- भारत के लगभग 50% उभयचर तथा 67% मत्स्य प्रजातियाँ इस क्षेत्र के लिए स्थानिक हैं।
- **खतरे:** यह क्षेत्र वनों की कटाई, खनन, कृषि विस्तार तथा अवसंरचना विकास जैसी गतिविधियों से उत्पन्न खतरों का सामना कर रहा है।
- **संरक्षण:** वर्ष 2012 में पश्चिमी घाट को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।
- **पश्चिमी घाट की प्रमुख चोटियाँ:** अनाईमुडी (Anamudi) पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी है, जो केरल में स्थित है।
- **डोड्डाबेट्टा (Doddabetta)** तमिलनाडु का सर्वोच्च बिंदु है।

स्रोत: IE

■■■■